है)। वास्तव में यह सिद्ध हुआ है कि एक दलीय राज्य किसी भी राज्य द्वारा अपनाए जाने योग्य एक तर्कसंगत नीति नहीं है।

तनज़ानिया जैसे राज्य में भी जहां आरूशा घोषणा ने एक बार एक दलीय राज्य की वैधानिकता को घोषित किया था, 1992 में संविधान को संशोधित करके बहुदलीय व्यवस्था को स्थापित कर दिया गया अब वहां संविधान द्वारा स्थापित कानून विरोधी दल विद्यमान है। अब CCM प्रधान दल नहीं है। यही बात USSR के साथ भी हुई वहां भी अब अनेक दल उत्पन्न हो गए हैं।

II. दो-दलीय व्यवस्था
(Two-Party System)

दो दल व्यवस्था वह स्थिति है जिसमें दो दल प्रमुख होते हैं। अन्य दल भी हो सकते है परंतु उनका कोई महत्व नहीं होता। इसका उदाहरण अवश्य ही अमरीका तथा ब्रिटेन ही हैं। ब्रिटेन में अनुदार (Conservative) तथा श्रमिक (Labour) दल हैं जबकि अमरीका में डिमोक्रेटिक तथा रिपब्लिकन दो दल हैं।

(1) ब्रिटेन में दो दल व्यवस्था

ब्रिटिश दल पद्धति की कुछ अपनी अद्‌भुत विशेषताएं है जिन्होंने न केवल ब्रिटेन बल्कि संसार के सभी लोकतंत्रीय देशों को प्रभावित किया है। संसदीय पद्धति वाले देश तो ब्रिटेन को इस दृष्टि से आदर्श मानते हैं। यहां की दल पद्धति की विशेषताओं को संक्षेप में नीचे दिया गया है-

(क) द्विदलीय पद्धति (Two-Party System)—द्विदलीय पद्धति (Two-Party System) से यह तात्पर्य है कि देश में दो प्रमुख दल होते हैं। चुनावों में एक दल को बहुमत प्राप्त हो जाता है और दूसरा विरोधी दल की भूमिका निभाता है। बहुमत प्राप्त करने वाला दल शासक दल बनता है और मंत्रिमंडल का गठन करता है जो कॉमन सभा के प्रति उत्तरदायी होता है। विरोधी दल शासक दल के शासन करने के अधिकार को स्वीकार करता है और शासन के कार्यों में अवरोध उत्पन्न नहीं करता। दूसरी ओर, शासक दल विरोधी दल की आलोचना करने के अधिकार को स्वीकार करता है।

ब्रिटेन ने द्वि-दलीय प्रणाली की नींव रखी और उसे विकसित करके एक व्यवस्था का रूप दिया। वहां की प्रतिनिधि शासन व्यवस्था द्विदलीय प्रणाली पर ही आधारित है। **एस.ई.फाइनर** ने कहा है कि द्विदलीय प्रणाली यह जानने की कुंजी है कि ब्रिटिश संविधान वास्तव में किस प्रकार काम करता है, (The two-party system is the key to understand how the constitution works----Finer S. E., *Comparative Government*, 1970, p. 158)। यद्यपि ब्रिटेन में द्विदलीय प्रणाली है किंतु वहां नए दलों के निर्माण पर कोई प्रतिबंध नहीं है। वास्तव में वहां आज भी अनेक दल हैं। जब हम कहते हैं कि ब्रिटेन में द्विदलीय प्रणाली है तो इससे हमारा तात्पर्य यह है कि वहां सदा से ही दो प्रमुख दल रहे हें। शेष दल गौण बने रहते हैं और इनका विशेष प्रभाव नहीं होता। ब्रिटेन की ससंदीय प्रणाली का विकास दो प्रमुख राजनीतिक दलों के संघर्ष से हुआ जो सत्रहवीं शताब्दी से लगातार चलता आया है। ये सर्वप्रथम **सरकारी दल** (Court party) तथा **देशीय दल** (Country party) के रूप में उदित हुए। कालान्तर में इन्होंने **टोरी व ह्विग दलों** का रूप ले लिया। उन्नीसवीं शताब्दी में अधिक विकसित रूप में **अनुदार व उदार दल** हमारे सामने आए। बीसवीं शताब्दी में उदार दल का ह्रास होता गया और उसके स्थान पर एक नया

श्रमिक दल उभरकर सामने आया। इस प्रकार वर्तमान युग में **अनुदार व श्रमिक दल** दो प्रमुख दल है।

(ख) मौलिक प्रश्नों पर मतैक्य (Consensus on Fundamentals)–वर्तमान प्रमुख राजनीतिक दल–अनुदार व श्रमिक–अपनी नीतियों व कार्यक्रमों के संबंध में मतभेद रखते हैं। अनुदार दल परंपराओं का संरक्षक है। वह निजी सम्पत्ति, मुक्त व्यापार तथा उग्रराष्ट्रवाद व साम्राज्यवाद का समर्थक है तो श्रमिक दल इन सबका घोर विरोधी है। वह समाजवादी नीतियों का समर्थक है तथा आर्थिक नियोजन व राष्ट्रीयकरण करने का पक्षपाती है। वह श्रमिकों व दुर्बल वर्गों की सहायता के लिए विशेष रूप से चिन्तित दिखाई देता है। इतना होते हुए भी ये दोनों दल मौलिक राष्ट्रीय प्रश्नों पर समान विचार रखते हैं। न्यायपालिका की स्वतंत्रता संसद की प्रभुत्व सम्पन्नता, निर्वाचनों की स्वतंत्रता, लार्ड सभा की उपयोगिता आदि अनेक ऐसे प्रश्न हैं जिनका उपरोक्त दोनों दल समर्थन करते हैं। इसी मतैक्यता के कारण चाहे किसी दल का ब्रिटेन में शासन हो वहां की राजनीतिक व्यवस्था को कोई आंच नहीं आती।

(ग) दलों की वर्ग प्रकृति (Class Character of Parties)–**जैनिंग्स** (Jennings) महोदय का कहना है कि ब्रिटेन के राजनीतिक दलों का स्वरूप राष्ट्रीय है और उन्होंने किसी भी व्यक्ति को धर्म, आर्थिक स्थिति अथवा वंश परंपरा के कारण समर्थन देने से मना नहीं किया है। उन्होंने कहा है कि अनुदार दल में सभी पूंजीपति नहीं है और न श्रमिक दल में केवल श्रमिक हैं, (The Conservative party is not all capitalists, nor is the Labour party made up entirely of worker---Jennings)।

इसी बात का **रोडी, एण्डर्सन व क्रिस्टोल** ने भी समर्थन किया है कि ब्रिटिश राजनीतिक दलों का विभाजन वर्गों के आधार पर न पहले कभी था और न आज है। एक ओर श्रमिक दल श्रमिकों के समर्थन से उदय हुआ, विकसित हुआ और शासक दल बना किंतु वर्तमान काल में उसे मध्य वर्ग व उच्च वर्ग के बड़े भाग का भी समर्थन प्राप्त है और दूसरी ओर अनुदार दल में भी उदारवादी विचारों के लोगों की कमी नहीं है। यद्यपि उपरोक्त विचारों में पर्याप्त सत्यता निहित है किंतु यह भी सत्य है कि ब्रिटिश राजनीतिक दलों की वर्गीय प्रकृति इस बात से प्रकट होती है कि इनका समर्थन करने वाले वर्ग निश्चित है और शासन पर अधिकार करने वाला वर्ग अपने समर्थक विशिष्ट वर्ग के हितों की पूर्ति करता है। श्रमिक दल को श्रमिक वर्ग का पूर्ण समर्थन प्राप्त है और अनुदार दल को धनी व कुलीन वर्ग का समर्थन प्राप्त है। यदि श्रमिक दल धनी वर्ग के हितों का विरोध करता है तो अनुदार दल इनके हितों का समर्थन करता है।

उपरोक्त विश्लेषण से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि यद्यपि ब्रिटेन के दलों का समर्थन करने वाले निश्चित वर्ग विद्यमान हैं किंतु ये पूर्णत: इन्हीं समर्थक वर्गों तक सीमित नहीं है बल्कि इन्हें अन्य वर्गों के लोगों का भी समर्थन मिलता है। मध्य वर्ग दलों को समर्थन प्रदान करता है। इसके समर्थन के बिना कोई भी दल शासन पर अधिकार करने का स्वप्न नहीं देख सकता।

(घ) कठोर दलीय अनुशासन (Strict Party Discipline)–ब्रिटेन के राजनीतिक दलों में कठोर अनुशासन पाया जाता है। दलीय अनुशासन से तात्पर्य यह है कि दल विशेष के टिकट पर चुने जाने के बाद प्रतिनिधि अपने दल के आदेशों का पालन करने के लिए बाध्य होता है तथा दल के नेताओं द्वारा अपनाई गई नीतियों व कार्यक्रमों का समर्थन करता है। वह दल की बैठकों में इन नीतियों व कार्यक्रमों पर अपने विचार व्यक्त कर सकता है किंतु पार्टी द्वारा लिए गए निर्णय सब पर बन्धनकारी होते हैं। कॉमन सभा में मंत्रिमंडल को इसी कारण सदा अपने दल का समर्थन

प्राप्त होता है। इसी अनुशासन के कारण विरोधी दल संगठित रूप में सरकार का विरोध करने की क्षमता नहीं प्राप्त कर पाता।

दलीय अनुशासन के कारण ही सचेतक अपने दल के सदस्यों को पक्ष या विपक्ष में मत देने के लिए बाध्य कर पाते हैं। सदस्य सचेतकों के आदेशों का पालन करने के लिए बाध्य होते हैं। दलीय अनुशासन को बनाए रखने में ब्रिटिश जनता का भी महत्वपूर्ण भाग है। कोई निर्वाचित सदस्य अपने दल के अनुशासन को तोड़कर अपने निर्वाचन क्षेत्र की जनता से पुनः समर्थन प्राप्त करने की आशा नहीं कर सकता।

एक अन्य महत्वपूर्ण बात यह है कि ब्रिटिश जनता स्वतंत्र प्रत्याशियों का समर्थन नहीं करती। अतः चुनाव में विजयी होने के लिए प्रत्याशियों को किसी न किसी राजनीतिक दल के सदस्य के रूप में चुनाव लड़ना आवश्यक हो जाता है। दल के सदस्य के रूप में वह दल की नीतियों व कार्यक्रमों में आस्था व्यक्त करता है और चुनावों के पश्चात् इन नीतियों व कार्यक्रमों को लागू करने के लिए प्रयत्न करता है। मंत्रिमंडल दल की नीतियों व कार्यक्रमों को निश्चित करता है। दलीय सदस्य मंत्रिमंडल द्वारा प्रस्तुत नीतियों व कार्यक्रमों का सदन में समर्थन करते हैं। इस प्रकार ब्रिटेन में कठोर दलीय अनुशासन स्थापित हो गया है।

3. नेताओं का दल में महत्व (Importance of Leaders in the Party)–ब्रिटेन की दल पद्धति में दल का नेता का विशेष स्थान है। सत्य तो यह है कि वहां के दल, नेताओं के इर्द-गिर्द घूमते हैं। नेता का दल के संगठन पर नियंत्रण होता है, वही दल की नीतियों व कार्यक्रमों को निश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, दल के कार्यकर्ता अपने नेता की लोकप्रियता तथा दल की नीतियों का प्रचार करते हैं। चुनावों के समय दल की विजय पूरी तरह नेता की लोकप्रियता तथा उसके प्रभाव पर निर्भर करती है। कहा जाता है कि ब्रिटेन की जनता दल को विजयी नहीं बनाती बल्कि विशिष्ट नेता के हाथों में देश की सत्ता सौंपने के लिए उसके दल के प्रत्याशियों को विजयी बनाती है।

ब्रिटेन में अनुदार दल के नेता की स्थिति श्रमिक दल के नेता की तुलना में अधिक मजबूत होती है। अनुदार दल का नेता आम चुनाव के लिए अपने दल के प्रत्याशियों को चुनने में, नीतियों के निर्धारण करने में, मंत्रिमंडल के निर्माण में तथा संसदीय पदाधिकारियों के चुनावों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अनुदार दलीय नेता की दल में स्थिति का वर्णन करते हुए **ब्रेनन** ने कहा है कि नीतियों की घोषणा करना नेता का परमाधिकार होता है। यद्यपि वह दल के वार्षिक सम्मेलनों में व्यक्त किए गए विचारों को ध्यान में रखता है किंतु वह उनके निर्णयों से बंधा हुआ नहीं होता. (It is leader's prerogative to pronounce on policy and although he inevitably takes account of the views of the Conference he is not bound by its decisions--Brennan)। जहां तक श्रमिक दल के नेता का संबंध है उसका प्रभाव चुनावों में विजयी हो जाने के पश्चात् अधिक दिखाई देता है।

(च) दलों की कार्यक्रम प्रधान प्रकृति (Programmatic Character of Parties)–ब्रिटिश दल पद्धति की एक विशेषता यह भी है कि ये कार्यक्रम प्रधान होती है। दल की नीतियों व कार्यक्रमों को निर्धारित करते समय दल में सभी स्तरों पर गंभीर चिन्तन होता है तथा उसके गुण व दोषों पर वाद-विवाद होता है। एक बार नीतियों व कार्यक्रमों के निर्धारित हो जाने के पश्चात् दल के कार्यकर्ता उसका प्रचार करते हैं। चुनावों से पूर्व उसे घोषणा पत्र के रूप में उसे प्रकाशित किया जाता है। जब जनता किसी दल को बहुमत में विजयी बनाती है तो यह माना जाता है कि जनता ने उक्त दल की नीतियों व कार्यक्रमों को लागू करने के लिए आदेश (Mandate) दिया

है। इस प्रकार बहुमत दल सरकार बनाकर अपनी घोषित नीतियों व कार्यक्रमों को लागू करने के लिए वचनबद्ध होता है।

दूसरे, ब्रिटेन में राजनीतिक दल कभी शांत नहीं बैठते। वे दो चुनावों के बीच के समय में अगले चुनावों की तैयारी करते हैं और अपनी नीतियों व कार्यक्रमों का निरंतर प्रचार करते रहते हैं। इसके लिए वे विभिन्न उपाय अपनाते हैं और जनता को अपने पक्ष का बनाते हैं जिससे चुनावों में उन्हें जनता का समर्थन प्राप्त हो सके। ब्रिटेन के राजनीतिक दल इसलिए भी क्रियाशील रहते हैं कि देश में मध्यवर्गीय चुनाव होने की स्थिति में वे तैयार रह सकें। **रोडी, एण्डर्सन तथा क्रिस्टोल** का कहना है कि अमरीका में राजनीतिक दल, दो चुनावों के बीच के काल में विश्राम करते हैं जबकि ब्रिटेन में किसी भी समय संसद के भंग होने का भय बना रहता है। इससे वहां के दलीय संगठन सदा चुनाव लड़ने के लिए तैयार व गतिशील बने रहते हैं, (.....the threat of parliamentary dissolution at any time keeps British Party organisations constantly mobilized—Rodee, Anderson and Christol)।

(2) अमरीका में दो दल व्यवस्था (Two Party System in America)

अमरीकी दलीय पद्धति की प्रमुख विशेषताओं को संक्षेप में निम्नलिखित प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है–

(क) द्वि-दलीय पद्धति (Two Party System)–अमरीका भी ब्रिटेन के समान द्वि-दलीय पद्धति वाला लोकतंत्र है किंतु वहां की दल पद्धति की प्रकृति सर्वथा भिन्न है।

वहां राष्ट्रीय, राज्यीय व नगर स्तर पर हितों के समूहनों (Interest aggregations) को दो दल प्रकट करते हैं। राष्ट्रीय दल व उसके नेताओं का लक्ष्य इन हितों के समूहनों (Interest aggregations) का निर्माण करना तथा उन्हें बनाए रखना होता है। इन समूहनों को यह विश्वास दिलाना आवश्यक है कि उनके हितों की पूर्ति राष्ट्रीय दल के साथ जुड़े रहकर तथा विभिन्न स्तरों पर और विशेषकर राष्ट्रीय स्तर पर चुनावों में दल को विजयी बनाकर की जा सकती है। राष्ट्रीय स्तर के दोनों दलों के यद्यपि दो अलग-अलग नाम हैं और अलग-अलग उनके संगठन है किंतु प्रत्येक दल के विभिन्न स्तरों पर विभिन्न घोषणा पत्र होते हैं जो अलग अलग स्थानों पर अलग अलग हितों को संतुष्ट करते हैं।

अमरीका में द्विदलीय पद्धति के विकास को औपनिवेशिक परंपरा ने विकसित किया है। अमरीका के अंग्रेजी भाषा-भाषी लोगों के रक्त में समझौता, समन्वय व व्यावहारिकता मिली होती है और अमरीका के विभिन्न हितों को सभी स्तरों पर दो दलों में केन्द्रित करने में उनकी इसी प्रवृत्ति ने सहयोग दिया है। प्रारंभ में संघवादी व संघविरोधी (Federalists and Anti Federalists) तथा बाद में संघवादी तथा लोकतांत्रिक गणतंत्रवादी (Federalists and Democratic Republicans), डेमोक्रेटिक्स व व्हिग्स (Democratics and Whigs) तथा अन्त में डिमोक्रेटिक व रिपब्लिकन (Democratic and Republican) दलों का राष्ट्रीय स्तर पर निर्माण हुआ। **बर्न्स एवं पेल्टासन** का कहना है कि हमारी राष्ट्रीय दलीय पद्धति की प्रमुख विशेषता यह है कि यहां द्विदलीय पद्धति है। यदि हमारे यहां भी तीन या अधिक दल होते तथा सत्ता संघर्ष के लिए परस्पर संघर्षरत रहते तो यहां की राजनीति की प्रकृति भी वर्तमान से सर्वथा भिन्न होती। यदि हमने फासिस्ट या साम्यवादी शासन प्रणालियों के समान एक दलीय पद्धति को अपनाया होता तो न केवल यहां के लोकतंत्र का स्वरूप भिन्न होता बल्कि वह अपना अस्तित्व ही खो बैठता. (The

vital feature of our National party system is that it is a two party system. If we had three or more parties seriously competing for power, our politics would be far different from what it is. If we has a one party system like the fascist or communist type, our democracy would be far different from what it is indeed it would doubtless be non existent---Burns, J. M. and Peltason, J. W. *Government by the people--The Dynamics of American Government*, p. 341)।

इस प्रकार अमरीका में राष्ट्रीय स्तर पर दो दल-**डिमोक्रेटिक** तथा **रिपब्लिकन** हैं किंतु इसका तात्पर्य यह नहीं है वहां अन्य दल हैं ही नहीं। वास्तव में वहां दलों का बाहुल्य है और उन सबका महत्व भी है। स्थानीय स्तर के दलों का वहां विशेष महत्व हैं क्योंकि वे अपने हितों के अनुसार राष्ट्रीय दल के अंग के रूप में काम करते हैं। साम्यवादी दल, समाजवादी श्रमिक दल, राष्ट्रीय राज्य अधिकार दल (National States Rights Party), नशाबंदी दल (Prohibitionist party), स्वतंत्र मतदाता दल (Independent Electors Party) आदि अनेक दलों ने यहां की राजनीति को प्रभावित किया है। यद्यपि ये दल राष्ट्रपति पद को प्राप्त करने की आशा नहीं करते क्योंकि ये केवल सीमित मतदाताओं को ही प्रभावित करते हैं किंतु ये अपनी विशिष्ट नीतियों व कार्यक्रमों को इस प्रकार से प्रचारित करते हैं कि इनका समर्थन प्राप्त करने के लिए कोई न कोई राष्ट्रीय दल उन्हें अपना कार्यक्रम मान लेता है और दूसरा दल इसका विरोध करने लगता है। यदि समर्थन करने वाला दल विजयी हो जाता है तो वह अपने समर्थक तीसरे दल के कार्यक्रमों को लागू करने का प्रयास करता है।

अमरीका की राजनीतिक व्यवस्था ने भी द्विदलीय प्रणाली के विकास में योग दिया है। यहां राष्ट्रीय राज्य तथा स्थानीय स्तर पर संपूर्ण कार्यपालिका शक्ति को एक व्यक्ति के हाथों में केन्द्रित किया गया है। **दूसरे**, अधिकांशतः यहां विधानमंडलों की सदस्यता के लिए एक सदस्यीय निर्वाचन क्षेत्रों को निर्माण किया जाता है अतः प्रत्येक पद पर एक ही व्यक्ति विजयी हो सकता है। इस प्रकार विजय की आशा में प्रत्याशी अधिकाधिक हितों को अपने पक्ष में केन्द्रित करने का प्रयत्न करता है और दूसरी ओर विभिन्न हितों से संबंधित वर्ग भावी विजयी प्रत्याशी के पक्ष में संगठित होने में अपने हितों की पूर्ति की आशा करते हैं। इस प्रकार दो पक्षों में सभी हितों का केन्द्रीकरण हो जाना सरल व तर्कसंगत हो जाता है।

अमरीका में द्विदलीय पद्धति के विकास का एक अन्य महत्वपूर्ण कारण यह है कि अधिकांश यूरोपीय देशों के विरुद्ध यहां का समाज आर्थिक व सामाजिक विचारों के आधार पर विभाजित नहीं है। कुछ वर्गों को छोड़ दिया जाए तो यहां की अधिकांश जनता अहस्तक्षेप की पूंजीवादी व्यवस्था में विश्वास करती है अतः यहां दलों का विभाजन सैद्धान्ति आधार पर नहीं है। यहां लोग अपनी समस्याओं के हल के लिए दलों पर दबाव डालते हैं। समस्याओं को दिए जाने वाले महत्व के आधार पर वे एक या दूसरे दल का समर्थन करते हैं। यहां के राजनीतिक दल राज्यों के विभिन्न वर्गों, समूहों व हितों की समस्याओं को अपनी समस्या बनाकर उनका समर्थन प्राप्त कर लेते हैं। यदि कोई तीसरा दल विकसित होता है तो जिन वर्गों के हितों की पूर्ति का वह प्रयास करता है उन प्रयत्नों को ये दल अपने कार्यक्रम में सम्मिलित कर लेते हैं जिससे तीसरा दल आधारहीन बन जाता है। इसका सर्वोत्तम उदाहरण राष्ट्रपति रूजवैल्ट द्वारा नए आर्थिक कार्यक्रम (New Deal) की घोषणा करना था। इस कार्यक्रम ने समाजवादियों को आधारहीन बना दिया क्योंकि इस आर्थिक कार्यक्रम में प्रमुख समाजवादी कार्यक्रम सम्मिलित थे। इस प्रकार राज्यों में दोनों राष्ट्रीय दल

विभिन्न हितों का समर्थन करते है। **सुट्टन** ने अमरीकी द्विदलीय पद्धति को बड़े सुन्दर शब्दों में स्पष्ट किया है। वह कहते है कि अमरीकी में पचास द्विदलीय पद्धतियां (अर्थात प्रत्येक राज्य की द्विदलीय पद्धति है) हैं किंतु कम से कम प्रत्येक चार वर्ष में एक राष्ट्रीय द्विदलीय पद्धति है। यह राष्ट्रीय द्विदलीय पद्धति दो चुनावों के बीच में भी, पृष्ठभूमि में ही क्यों न सही, अवश्य स्थित रहती है, (There are fifty two party systems but at least once every four years, there is one national two-party system, the existence of which persists, even if in the background, during the intervening period..... Sutton, *J. S. American Government.* p. 159)।

(ख) स्पष्ट सैद्धांतिक मतभेदों का अभाव (No clear indeological differences)–हम जानते हैं कि यद्यपि ब्रिटेन व अमरीका में न केवल द्विदलीय पद्धति है बल्कि देनों देशों में दलों का विकास संविधान के बाहर हुआ है। किंतु एक प्रमुख बात में दोनों देशों की दल पद्धति में मौलिक अन्तर है। ब्रिटेन में दलों का आधार सैद्धांतिक व वैचारिक पृष्ठभूमि है जबकि अमरीका के प्रमुख दलों में सैद्धांतिक दृष्टि से विशेष अन्तर नहीं है। आंतरिक नीति के संबंध में ब्रिटेन के दलों, अनुदार तथा श्रमिक, में व्यापक मतभेद है। एक ओर अनुदार दल पूंजीवादी व्यवस्था से जुड़ा हुआ है तो श्रमिकदल अधिकाधिक समाजवादी नीतियों के लिए वचनबद्ध है। अमरीका में सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक विचारधारा के आधार पर आज दलों में अन्तर करना बहुत कठिन है। वे मौलिक प्रश्नों पर एक-दूसरे के विपरीत सिद्धांतों से बंधे हुए नहीं है और न उनके प्लेटफार्म (चुनाव घोषणापत्र) आर्थिक व सामाजिक प्रश्नों पर सैद्धांतिक बंधनों से बंधे होते हैं। उनमें अंतर इस बात पर होता है कि कौन सा दल किस प्रश्न को कितना महत्व देता है।

अमरीका में प्रत्येक राज्य की अपनी-अपनी राजनीति व अपनी-अपनी समस्याएं हैं और इस कारण प्रत्येक राज्य के दोनों राजनीतिक दल दूसरे राज्य के इन्हीं राजनीतिक दलों से विचारधारा व कार्यक्रमों की दृष्टि से भिन्न हो सकते हैं तथा भिन्न सामाजिक व आर्थिक समस्याएं रखने वाले राज्यों के दोनों राष्ट्रीय दलों, डिमोक्रेटिक व रिपब्लिकन, के अपने कार्यकर्ताओं के विचारों में चाहे समानता दिखाई न दे किंतु राष्ट्रीय स्तर पर वे अपने दलीय प्रत्याशियों को विजयी बनाकर अपने हितों की पूर्ति के लिए सदा कार्यरत रहते हैं। इसका प्रमुख कारण, **रेडफोर्ड** (Redford) के शब्दों में यह है कि अमरीकी व्यवस्था में अपने सिद्धांतों की शुद्धता की तुलना में महत्वपूर्ण बात निर्वाचन के दिन अच्छा प्रदर्शन करने की है, (a good showing on Election Day is more important than the purity of one's principles. ----Redford E. S. *Politics and Government in the United States,* New York, 1968, p. 541)।

चूंकि अमरीका के लोग सामान्यत: अहस्तक्षेप की पूंजीवादी व्यवस्था में विश्वास करते हैं, लोकतंत्र मौलिक स्वत्रताएं, व्यक्तिगत सम्पत्ति व विश्व शांति में उनकी गहरी आस्था है अत: वहां के दोनों राजनीतिक दल इन सिद्धांतों में आस्था व्यक्त करते हैं। दोनों दलों में कोई मौलिक सैद्धांतिक मतभेद नहीं है। दोनों दलों में उदार व अनुदार दोनों तत्व सम्मिलित हैं, दोनों को श्रमिकों व पूंजीपतियों दोनों के मत मिलते हैं, दोनों समानरूप से कृषि व उद्योगों के विकास के लिए प्रयत्नशील हैं दोनों साम्यवादी विरोधी हैं तथा दोनों की समाज कल्याण की नीतियों में कोई मौलिक अन्तर नहीं है। वैचारिक समानता के कारण ही **फाइनर** (Finer) ने कहा है कि अमरीका में केवल एक ही राजनीतिक दल रिपब्लिकन डिमोक्रेटिक दल- हैं जिसके लगभग बराबर -बराबर दो भाग हैं जो पदों की प्राप्ति के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। इनमें से एक भाग का नाम रिपब्लिकन दल और